Tender Heart High School, Sec.33-B, CHD.

कक्षा - आठवीं (पाठ-13 काहिरा से गुज़रते हुए) -1
विषय - हिंदी साहित्य (यात्रा वृत्तांत) लेखक-सुभाषचंद्र बोस
शिक्षिका - सुमन शर्मा

पुस्तक - नवतरंग भाग-8

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा आठवीं की पुस्तक के पृष्ठ-106 पर दिए पाठ-13 'काहिरा से गुज़रते हुए' को पढ़ेंगे।

बच्चो! यह पाठ सुभाषचंद्र बोस द्वारा रचित है। नेताजी के नाम से प्रसिद्ध सुभाषचंद्र बोस भारत के सबसे बड़े स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे। नेताजी ने भारत की आज़ादी के लिए आज़ाद हिंद फ़ौज का गठन किया और आज़ाद भारत की पहली सरकार बनाई। उनके दिए नारे 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा' 'जय हिंद', 'दिल्ली चलो' आदि आज भी प्रेरणा जगाते हैं। प्रस्तुत यात्रा का वर्णन उन्होंने 90 साल पहले बंगाल के आनंद बाज़ार पत्रिका समाचार पत्र के लिए लिखा था। इस पाठ में सुभाष-चंद्र बोस विदेश की यात्रा कर रहे थे। विदेश यात्रा के दौरान वे मिस्र देश की राजधानी काहिरा से गुज़रे थे, उसी यात्रा का वर्णन तथा अपना अनुभव इस पाठ में नेताजी ने लिखा है। अब मैं पाठ को पढ़ती हूँ।

आधुनिक मिस्र की राजधानी काहिरा जैसे और भी कई सुंदर शहर हैं। नील नदी के आँचल में, पिरामिडों की छत्रछाया में बसे इस शहर की जलवायु बहुत सुखद है। सुंदर सड़कें, आकर्षक भवन आदि विदेशियों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। किंतु स्वेज नहर को पार करने वाले कितने कम भाग्यशाली लोग होंगे जो वहाँ से गुज़रते हुए काहिरा गए होंगे।

16 जनवरी, 1935 को रात्रि 9 बजे हम स्वेज़ में थे।

Scanned with CamScanner

DATE 18.11.24
PAGE No. 2

कक्षा- आठवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-13 "काहिरा से गुज़रते हुए")

समुद्र के किनारे काफ़ी दूर जहाज़ का लंगर डाला गया। अतः हमें फेरी द्वारा किनारे पर पहुँचना पड़ा। चाँदनी रात थी। समुद्र का पानी चंद्रमा की रोशनी से चमक रहा था। हमारे चारों ओर स्वेज नहर की तथा बंदरगाह की लाइटें चमक रही थीं जिनकी परछाईं समुद्र में नाच रही थी। 'कस्टम बैरियर' पार करके हम कार में बैठे जो हमें काहिरा ले गई। शीघ्र ही शहर से निकलकर हम रेगिस्तान में पहुँच गए जो उत्तर दिशा में था। रास्ता शांत था। दोनों ओर अंतहीन रेत फैली थी, सड़क सीधी थी और आकाश से चाँद की पीली-पीली चाँदनी छिटक रही थी। मध्यरात्रि में हम काहिरा पहुँचे। रात के सन्नाटे में, काहिरा में रोशनी से चमकती सड़कें और सीधे खड़े भवन जादुई दिखाई दे रहे थे।

अगली सुबह हम पिरामिड देखने पहुँचे। ठंडी हवा चल रही थी, चीरकर रख देने वाली हवा से निकलकर हम नील घाटी पारकर विश्व प्रसिद्ध पिरामिडों तक पहुँचे जो प्रातःकालीन सूर्य की रोशनी में चमक रहे थे। हम ठीक उनके नीचे पहुँचे और गर्दन उठाकर देखने लगे। यही वे पत्थर के स्मारक थे जिन्होंने नेपोलियन जैसे योद्धा की कल्पना को ललकारा था। फ्रांसीसी राजा ने अपनी सेनाएँ ठीक इनके नीचे लाकर खड़ी कर दी थी और अपने थके-हारे सैनिकों को यह कहकर प्रोत्साहित किया था कि 5000 वर्ष झुककर उनकी ओर देख रहे हैं।

बच्चो! पाठ में आए कुछ कठिन शब्दों के अर्थ मैं बताऊँगी।

शब्दार्थ :—

छत्रछाया - संरक्षण
आकर्षित - अपनी ओर खींचना
लंगर - मोटी रस्सी या ज़ंजीर जो पानी के जहाज़ को खड़ा करने में काम आता है।

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner

DATE 18.11.24
PAGE No. 3

कक्षा - आठवीं सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-13 'काहिरा से गुज़रते हुए')

शब्दार्थ:- शीघ्र - जल्दी सुखद - सुख देने वाला
मध्यरात्रि - आधी रात फेरी - नौका, नाव
प्रोत्साहित - उत्साहित अंतहीन - अनंत
स्मारक - याद दिलाने वाला

बच्चो! जो पाठ अब तक पढ़ा आपने, आशा है, समझ में आ गया होगा। मैं आपको थोड़ा और समझाने का प्रयास करती हूँ।

आधुनिक मिस्र की राजधानी काहिरा नील नदी के आँचल में एवं पिरामिडों की छत्रछाया में बसा हुआ सुंदर शहर है। यहाँ की जलवायु बहुत सुखद है। सड़कें सुंदर और श्रवन आकर्षक होने के कारण यह शहर विदेशियों के आकर्षण का केंद्र है। विदेश यात्रा के दौरान सुभाष चंद्र बोस जी को स्वेज नहर को पार करना था। उन्हें स्वेज नहर से काहिरा जाना था। 16 जनवरी, 1935 को वे रात नौ बजे स्वेज में थे। जहाज़ का लंगर काफ़ी दूर किनारे से डाला गया था। जिसके कारण यात्रियों को नाव द्वारा किनारे पर पहुँचना था। 'कस्टम कैरियर' को पार करके लेखक और उसके मित्र, साथी कार में बैठ गए। वह कार उन्हें काहिरा ले गई। शीघ्र ही वे शहर से निकलकर उत्तर दिशा के रेगिस्तान में पहुँच गए। सारा रास्ता शांत था। हर तरफ़ रेत ही रेत थी। आधी रात को लेखक अपने अन्य साथियों के साथ काहिरा पहुँच गए। काहिरा की सड़कें रोशनी से जगमगा रही थीं।

अगली सुबह लेखक अपने साथियों सहित पिरामिड देखने गए। नील नदी को पार करके जब वे विश्व प्रसिद्ध पिरामिड तक पहुँचे तो वे

(पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner

DATE 18.11.24
PAGE No. 4

कक्षा - आठवीं सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-13 काहिरा से गुज़रते हुए)

सूरज की रोशनी पड़ने से चमक रहे थे। लेखक एवं उनके साथी उन पिरामिडों के नीचे खड़े होकर उन्हें गर्दन उठाकर देख रहे थे। इन्हीं पत्थरों के स्मारकों ने नेपोलियन जैसे योद्धा की कल्पना को ललकारा था। फ्रांसीसी राजा ने अपनी सेनाएँ पाँच हज़ार वर्ष पुराने स्मारक के नीचे लाकर उन्हें प्रोत्साहित किया था।

बच्चो! लेखक अपने साथियों के साथ पिरामिडों के चारों तरफ़ घूमे। उन्हें देखकर लेखक को प्रेरणा का अहसास हुआ। उन बहुत बड़े आकार के पिरामिडों के सामने फैले अनंत रेगिस्तान में खड़े होकर मनुष्य की शक्ति एवं आत्मा की अनंतता का आभास हुआ। इन पिरामिडों के शिल्पकारों ने समय को हरा दिया और स्वयं को इन पत्थरों में सदा के लिए ज़िंदा कर लिया। पिरामिडों के सम्मीप ही सदा रहने वाले स्फिंक्स हैं। एक गाइड ने लेखक को बताया कि प्राचीन मिस्रवासी सूर्य देवता के पुजारी थे। यह सच्चाई कोई नहीं जान सका कि स्फिंक्स सूर्य के सूचक हैं या सूर्य पूजा के प्रतिनिधि। स्फिंक्स के सिर पर एक चिड़िया बैठी देखकर गाइड ने उस चिड़िया को 'स्फिंक्स की आत्मा' कहा और बताया कि वह चिड़िया यहाँ प्रतिदिन आती है। लेखक ने पास से देखा तो महसूस किया कि स्फिंक्स की नाक उड़ चुकी थी। गाइड ने लेखक को सोचने का मौका न देकर बताया कि नेपोलियन की तोप के गोले से उड़ गई। नेपोलियन का संबंध पिरामिडों से अवश्य था। इस बात ने लेखक को आश्वस्त कर दिया। लेखक फिर से पिरामिडों की तरफ़ मुड़े। गाइड ने उन्हें पिरामिडों के ऊपर तक ले जाने की पेशकश की परन्तु लेखक ने समय की कमी रहते हुए यह पेशकश अस्वीकार कर दी।

बच्चो! आज हम इस पाठ को यहीं समाप्त करते हैं। पाठ का शेष भाग हम अगले सप्ताह पढ़ेंगे। अब मैं आपको गृहकार्य करने को दे रही हूँ।

गृहकार्य:-

सब बच्चे कार्य जो कराया है - शब्दों के अर्थ अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे।

शेष भाग अगले सप्ताह---

(अंतिम पृष्ठ-4)

Scanned with CamScanner